।। सारस्वतमुपास्महे।।

सा विद्या या विमुक्तये

नमन

भारतीय शिक्षक परम्परा

लेखक

विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी

बालकथा एवं विज्ञान लेखक

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष : 011-22914799

website: www.abrsm.in, www.abrsm.co.in

Email: abrsmdelhi@rediffmail.com, abrsmdelhi@gmail.com

नमन

भारतीय शिक्षक परम्परा

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

- प्रकाशन दिवस : विजयादशमी, विक्रम संवत् 2069, युगाब्द 5114
- सहयोग राशि : 100/-
- अक्षर संयोजन :
  सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर
- मुद्रक : **कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर**
- प्रकाशक :
  अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

अनुक्रम

1.	दूरदृष्टा : आचार्य चाणक्य	11
2.	करुणा के सागर : ईश्वरचंद विद्यासागर	15
3.	भारत माता का सच्चा शेर : दादाभाई नौरोजी	18
4.	महिला शिक्षा की पुरोधा : श्रीमती सावित्री फूले	22
5.	वनस्पतिशास्त्र के जनक : डॉ.शिवराम कश्यप	25
6.	राष्ट्रीय शिक्षा के प्रणेता: लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक	28
7.	शिक्षा के महात्मा : अश्विनीकुमार दत्त	32
8.	क्रेस्कोग्राफ के जनक : डॉ. जगदीशचंद्र बोस	36
9.	व्यावहारिक शिक्षा के प्रयोगधर्मी : रवीन्द्र नाथ ठाकुर	39
10.	सच्चे रसायन शास्त्री : प्रफुल्लचन्द्र राय	42
11.	आदर्श राजनेता : महामना मदनमोहन मालवीय	45
12.	महान युगदृष्टा : स्वामी विवेकानन्द	49
13.	शिक्षा में राष्ट्रवाद के जनक : सतीशचन्द्र मुखर्जी	53
14.	राजनीति में अध्यात्म के प्रणेता : गोपालकृष्ण गोखले	57
15.	नारी शक्ति की अद्भुत प्रतीक : बहिन निवेदिता	61
16.	क्रान्तिकारी विचारक : महर्षि अरविन्द	65
17.	आध्यात्मिक राष्ट्रीयता के प्रणेता: स्वामी रामतीर्थ	69
18.	शिक्षा को समर्पित व्यक्तित्व : आशुतोष मुखर्जी	73
19.	बहुमुखी प्रतिभा के धनी : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	77
20.	मूछों वाली माँ : गिजूभाई	81
21.	अल्पज्ञात वैज्ञानिक प्रतिभा : देबेन्द्रमोहन बोस	84
22.	सवाई गुजराती : दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर	87
23.	महान गणितज्ञ : श्रीनिवास रामानुजन् आयंगर	91
24.	महान दार्शनिक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन	96
25.	रमन प्रभाव के जनक : चन्द्रशेखर वेंकट रमन	100

26. भारतीय संविधान शिल्पी : डॉ.भीमराव अम्बेडकर 103
27. मृदा वैज्ञानिक : डा. नील रत्न धर 107
28. भारतीय अन्तर्मना वैज्ञानिक : जेबीएस हॉल्डेन 111
29. देशभक्त वैज्ञानिक : डा. मेघनाथ साहा 115
30. मातृभाषा के योद्धा : सत्येन्द्रनाथ बोस 119
31. अनुसंधान क्रान्तिदूत : डॉ. शान्तिस्वरूप भटनागर 123
32. मातृभाषा के प्रबल पक्षधर : डॉ. के.एस.कृष्णन 126
33. अखण्ड भारत के उद्घोषक : डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी 130
34. गुरु शिष्य परम्परा के पोषक : डॉ. पंचानन महेश्वरी 134
35. अनुकरणीय शिक्षक : श्री गुरुजी 138
36. वैज्ञानिक शिक्षाशास्त्री : डॉ. दौलतसिंह कोठारी 141
37. परमाणु शक्ति के जनक : होमी जहाँगीर भाभा 145
38. राष्ट्र समर्पित वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई 148
39. मिसाइल मैन : डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम 151
40. खगोलीय भौतिकी विज्ञानी : डॉ. जयन्त विष्णु नार्लीकर 155

प्रकाशकीय

आज जब हम सर्वदूर दृष्टिपात करते हैं तो हमें दिखाई देता है कि सम्पूर्ण विश्वभर में अपना भारत देश कुछ अलग है। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर अति समृद्ध है क्योंकि भारतीय जीवन दर्शन की अनूठी परम्परा सम्पूर्ण त्याग, समर्पण, परहित सोच पर आधारित एक लम्बी अवधि से चली आई है आज जिसकी कोई तुलना नहीं।

आज विश्व एक चौराहे पर खड़ा दिग्भ्रमित, पराजित, थका-मांदा, अपनी उज्ज्वल परम्परा का विस्मरण कर दूसरी ओर ताकता नजर आ रहा है ऐसे में आज भी 'भारत' इससे निश्चिंत, अप्रभावित, उत्साह से सरोबार विश्व को मार्गदर्शन देने के लिए खड़ा है तो उसका एक मात्र कारण भारत के शिक्षकों, आचार्यों, गुरुजनों की परम्परा, जो ऋषि परम्परा, गुरुकुल परम्परा, गुरु-शिष्य सम्बन्धों पर आधारित उच्च कोटि के वर्तमान समयानुसार विकल्प देते हुए किसी भी 'आक्रान्ताओं' के प्रयत्नों के परिणाम से विचलित न होते हुए विशिष्ट जीवन शैली ने हम सभी को सदैव मार्गदर्शित किया है। इसी प्ररम्परा के वाहक आचार्यों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों से उनके द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्यों के प्रकाश में 'नमन' पुस्तकाकार में आपको सुपुर्द कर हम अति प्रसन्न ही नहीं संतुष्ठी का भाव लिए हुए हैं। आशा है इसके अध्ययन के बाद अपने मन का विश्वास दृढत्तर होगा और उसी आधार पर अपने कार्य कौशल द्वारा विश्वपटल पर केवल 'भारत' दिखाई देगा। और पुस्तक की सार्थकता तभी होगी जब अनुकूल परिवर्तन को अभिप्रेत सिद्ध हो।

पुस्तक के विद्वान लेखक श्री विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी ने हमारे आग्रह को ध्यान में रख अत्यल्प समय में ही पुस्तक पांडुलिपि मुद्रण हेतु उपलब्ध कराने से अतिशीघ्र ही आप सबके अवलोकन के लिए आपके समक्ष है। इसके लिए प्रकाशन समिति उनका हृदय से अभिनन्दन करती है। सुधी पाठकों के कर कमलों में पुस्तक सोंपते हुए हमें हर्ष है कि 'नमन' पुस्तक अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

-प्रकाशन समिति

लेखकीय अनुरोध

भारतीय शिक्षक परम्परा को 'नमन' पुस्तकाकार में आप तक पहुँचा कर मैं अति हर्षित हूँ। शैक्षिक मंथन में प्रतिमाह 'जन्मदिन के अवसर पर', स्तम्भ के अन्तर्गत, भारत के किसी एक ऐसे महापुरुष का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता रहा है जो अपने जीवन में पूर्ण या आंशिक रूप से शिक्षक भी रहे। भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन व विकसित संस्कृति है। किसी भी संस्कृति को उसका स्वरूप प्रदान करने में उसके शिक्षकों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में महान शिक्षकों की परम्परा प्राचीनकाल में ही समाप्त नहीं हो गई, वह अभी तक भी चल रही है। इस बिन्दु की ओर नवीन पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से इस पुस्तक में उन्नीसवीं व बीसवीं सदी के 40 शिक्षक प्रेरक महापुरुषों का परिचय संकलित किया गया है। आलेखों को महान शिक्षकों की जन्मतिथि के क्रम में दिया गया है जिससे देश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का चित्र भी स्पष्ट होता रहे। पुस्तक में आचार्य चाणक्य को भी सम्मिलित करने का कारण यह है कि आचार्य चाणक्य व्यक्ति से अधिक विचार है। आचार्य के विचार सार्वकालिक हैं और आज भी उतने ही प्रासांगिक हैं जितने पूर्व में किसी अन्य समय में रहे हैं।

पुस्तक में सम्मिलित महान शिक्षकों के जीवन का सम्पूर्ण परिचय न देकर केवल प्रमुख प्रसंगों को ही स्थान दिया गया है। हमारा प्रयास यह है कि वर्णित प्रसंग पाठकों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न कर शिक्षकों के विषय में गहनता से अध्ययन करने की आतुरता जगा सकें ।

कहा जाता है कि किसी देश को गुलाम बनाए रखना है तो उसकी संस्कृति को नष्ट कर दो। भारत पर शासन बनाए रखने के प्रयास में हर आक्रांता ने यह प्रयास किया, उसमें सर्वाधिक नवीन प्रयास लार्ड मेकाले द्वारा किया गया। इस बात कि प्रसन्नता है कि अंग्रेजों के नापाक इरादों को भांप मेकाले की शिक्षा नीति का सशक्त विरोध उन्नीसवीं सदी के अन्त में प्रारम्भ हो गया था। सतीशचन्द्र मुखजी, महर्षि अरविन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मेकाले की नीति के खोखलेपन को उजागर करने के साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा के रूप में एक सशक्त विकल्प भी प्रस्तुत किया। अन्य नेताओं ने इस भावना को विस्तार दिया।

स्वतन्त्र भारत के नीति निर्माताओं द्वारा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की भावना का सम्मान किया जाता तो देश स्वतन्त्र होने के तुरन्त बाद मेकालयी शिक्षा व्यवस्था को समाप्त कर देश में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था को लागू किया जाता। अपने को आधुनिक दिखलाने के चक्कर में ऐसा नहीं किया गया, परिणाम आज हमारे सामने हैं। मेकालयी शिक्षा प्रणाली ने स्वतन्त्रता पूर्व से भी अधिक मजबूत पैर भारत में जमा लिए हैं। देश की संस्कृति पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक इस बात को समझे

तथा देश के हितों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था करने के लिए प्रयासशील हों। इस सोच को बनाने में 'नमन' पुस्तक मदद करेगी, ऐसा विश्वास है।

कम समय में इतनी सामग्री जुटाने व अध्ययन करने व लिखने के लिए आवश्यक समय उपलब्ध कराने तथा आलेख बनने के बाद उसका प्रथम पाठक बन आवश्यक सुधार करवाने में श्रीमती शैल चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। पाण्डुलिपि को पुस्तक में बदलने के कार्य में संलग्न कई साथियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, मैं इन सभी का आभार स्वीकारता हूँ। पाठकों के बिना पुस्तक का कोई महत्व नहीं होता। मैं आभारी हूँ शैक्षिक मंथन के सभी पाठकों का, जिन्होंने मेरे आलेखों को पढ़ा और उत्साहवर्द्धन करते रहे। इसी प्रकार का सहयोग रहा तो इस शृंखला को आगे बढ़ाने का मेरा प्रयास रहेगा।

पाली (राजस्थान)
16 अक्टूबर, 2012
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2069

विनीत
विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी

शिक्षा कहती है – ''मैं सत्ता की दासी नहीं हूँ, कानून की किंकरी नहीं हूँ, विज्ञान की सखी नहीं हूँ, अर्थशास्त्र की बांदी नहीं हूँ, मैं तो धर्म का पुनरागमन हूँ। मानस शास्त्र और समाज शास्त्र मेरे दो चरण हैं। कला और कारीगरी मेरे हाथ हैं। विज्ञान मेरा मस्तिष्क है। धर्म मेरा हृदय है। निरीक्षण और तर्क मेरी आँखें हैं। इतिहास मेरे कान हैं। स्वातंत्र्य मेरा श्वास है। उत्साह और उद्योग मेरे फेंफड़े हैं। धैर्य मेरा व्रत है। श्रद्धा मेरा चैतन्य है। ऐसी मैं जगदम्बा हूँ। जगद्धात्री हूँ। मेरा उपासक कभी किसी का मोहताज नहीं रहेगा। उसकी सभी कामनायें मेरी कृपा से तृप्त हो जायेंगी।''

– काका कालेलकर

दूरदृष्टा : आचार्य चाणक्य

अंशुल, अंशु, कौटिल्य, विष्णुगुप्त, द्रमिला आदि अनेक नामों से जाने वाले एक सामान्य ब्राह्मण शिक्षक पुत्र ने अपनी प्रज्ञा के बल पर राष्ट्रहित में इतना कार्य कर दिखाया कि उन्हें आज भी आदरपूर्वक आचार्य चाणक्य के नाम से याद से किया जाता है। उनकी सीख को चाणक्य नीति के रूप में अध्ययन किया जाता है। शिक्षक उनके जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। आचार्य चाणक्य के काल को गुजरे 2300 वर्ष हो गए। देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए उनके विचार आज भी प्रासांगिक लगते हैं।

आचार्य चाणक्य के व्यक्तिगत जीवन के विषय में प्रामाणिक जानकारी बहुत कम उपलब्ध है। विशाखदत्त द्वारा लिखित नाटक मुद्राराक्षस से इनके जीवन के विषय में कुछ जानकारी मिलती है। इनका जन्म पाटलिपुत्र (पटना) में आचार्य चणक के पुत्र के रूप में हुआ। सम्भवत: इसी कारण इनको चाणक्य के नाम से पहचान मिली। चाणक्य की प्रारम्भिक शिक्षा पिता के सानिध्य में नालन्दा विश्वविद्यालय में हुई। प्रारम्भ में वेदों का अध्ययन किया। वैदिक ज्योतिष में भी चाणक्य ने महारत प्राप्त की। बाद में उनकी रुचि राजा के कार्य तथा शासन की कार्य प्रणाली में बढ़ती गई। उस समय पाटलिपुत्र मगध राज्य की राजधानी थी तथा नन्द वंश का राजा धनानन्द राजसिंहासन पर बैठा था। धनानन्द एक क्रूर शासक था। प्रजा उसके राज्य में दु:खी थी। आचार्य चणक को पहले तो बन्दी

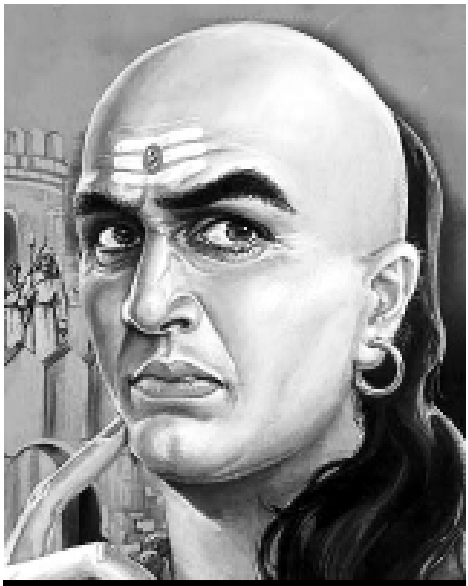

350 से 275 ई. पूर्व

आज छोटे छोटे राजनैतिक दलों ने वैसी ही स्थिति उत्पन्न कर रखी है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढते वर्चस्व के रूप में विदेशी खतरा आज भी बना हुआ है। आचार्य चाणक्य जैसा ज्ञानी, नि:स्वार्थ, चुस्त, परिणामों का पीछा करने वाला, दूरदर्शी, मेहनती, संवेदनशील व राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति ही सबको एक सूत्र में बांध कर राष्ट्र हित के निर्णय करवा सकता है।

बनाया गया फिर बन्दीगृह में ही उनकी हत्या कर दी गई। चाणक्य पाटलिपुत्र छोड़ तक्षशिला चले गए। तक्षशिला में आचार्य के रूप में शिक्षण कार्य करने लगे। आचार्य चाणक्य कई विषय पढ़ाते थे मगर राजनीतिशास्त्र उनका प्रिय विषय था। उन दिनों गुरु अपने पास उपलब्ध श्रेष्ठ ज्ञान को शिष्यों को दिया करता था। ज्ञान मात्र सिद्धान्तों तक ही सीमित नहीं होता था अपितु उसके व्यावहारिक पक्ष को पूर्ण महत्व दिया जाता था।

राष्ट्र की रक्षा को ध्येय बनाया

भारत पर यवनों का आक्रमण होने पर विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन का वातावरण समाप्त हो गया तो आचार्य चाणक्य राष्ट्र की रक्षा हेतु राजनीतिशास्त्र का व्यावहारिक उपयोग करने मैदान में आ गए। राष्ट्रहित को सर्वाधिक महत्व देते हुए आचार्य, धनानंद के साथ चल रही कटुता को भुला यवनों के विरुद्ध समर्थन जुटाने बड़े राज्य मगध की राजधानी पाटलिपुत्र पहुँचे। दुष्ट धनानंद समय की मांग को नहीं समझ सका और आचार्य चाणक्य को अपमानित कर दरबार से निकाल दिया। तब आचार्य को लगा कि राष्ट्र की रक्षा के लिए मगध के राज सिंहासन पर किसी सशक्त राजा का होना आवश्यक है। स्पष्ट है कि राष्ट्रहित के कारण ही आचार्य ने धनानंद को हटाने का व्रत धारण किया होगा न कि व्यक्तिगत कारणों से। चन्द्रगुप्त में नेतृत्व के गुण देख कर आचार्य ने उसे शिष्य बनाना चाहा तो आचार्य में शत्रु को निर्णायक स्थिति तक नष्ट करने की अकाट्य इच्छा शक्ति देख कर चन्द्रगुप्त चाणक्य को गुरु मानने को तत्पर हुआ।

आचार्य चाणक्य के सामने यवनों को परास्त करने हेतु एक अत्यन्त शक्तिशाली राज्य स्थापित करने की एक बड़ी चुनौती थी। भारत राष्ट्र अनेक छोटी-छोटी स्वतन्त्र इकाईयों में बटा था। कुछ सैनिक शक्ति एकत्रित होने पर आचार्य चाणक्य ने धनानंद पर सीधा आक्रमण करवाया मगर असफलता हाथ लगी। उसके बाद एक ग्रामीण महिला से प्राप्त शिक्षा के आधार पर मगध राज्य के दूरस्थ भागों पर आक्रमण करने प्रारम्भ किए। योजना सफल रही, वे जीतते गए। आचार्य चाणक्य को कौटिल्य के नाम से इसी कारण जाना जाता है क्योंकि उन्होंने अपने विजय अभियान में कूटनीति का पूरा उपयोग किया था। चन्द्रगुप्त को सिकन्दर की सेना में सम्मिलित करा, चन्द्रगुप्त को सिकन्दर का विश्वासपात्र बनने दिया। बाद में सिकन्दर को ऐसे मार्ग से लौटने के लिए मजबूर किया कि सिकन्दर की अधिकांश सेनाएं मार्ग में ही नष्ट हो गई। आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाने के बाद अपने सबसे बड़े शत्रु धनानन्द के महामात्य राक्षस को मौर्य साम्राज्य का प्रधानमंत्री बनने के लिए भी तैयार किया था।

आचार्य चाणक्य सम्राट को शत्रुओं के आघात सहने योग्य बनाने हेतु चन्द्रगुप्त के भोजन में नियमित रूप से विष मिलवाया करते थे। एक दिन चन्द्रगुप्त की महारानी ने उसके साथ भोजन किया तो उसकी मृत्यु हो गई। रानी कुछ ही दिनों में माँ बनने वाली थी। चन्द्रगुप्त ने सन्तान को बचाने की इच्छा प्रकट की तो रानी का पेट चीर कर बच्चे को बचा लिया गया। शल्य क्रिया के दौरान विष की एक बूंद बालक पर गिर गई तो शरीर पर चिन्ह बन गया। इस घटना के कारण आचार्य चाणक्य ने बालक का नाम बिन्दुसार रखा। सम्राट चन्दगुप्त के